मर्द धोती कमरी अंगरखी पहनते हैं, सिर पर पोतिया (मुड़ास) बांधते हैं जाड़े में खेसला (चादरा) या कम्मल ओढ़ते हैं मगर गुली (नील) का रंगा हुआ कपड़ा नहीं पहनते औरतें तो पहिन लेती हैं।

मर्द इतना गहना पहिनते हैं—कानों में मुरकियां, गले में कंठी, डोरा, कांठला, मूंगों की माला, सोने चांदी का फूल जिस में जोगमाया, या बूजी, या रामदेव जी की मूर्ति खुदी होती है। हाथों में माठी, पहुंची, भुजबंद, कमर में जनेऊ कंदोरा, पांव में चांदी की कड़ी बेड़ी लंगर और जूता सोने के लंगर बेड़ी और कड़ी राज के हुक्म बिना नहीं पहन सकते क्योंकि भोमिये हैं बड़े जागीरदार नहीं हैं।

तलवार और लाठी हाथ में रखते हैं और छुरी कमर में।

औरतों की पौशाक घागरा, कांचली, अंगरखी, और ओढ़नी है, रंग चाहे जैसाही हो चूड़ा हाथी दांत का पहिना जाता है। जो सब चूड़ों में अव्वल नंबर का गिना जाता है और व्याह में चढ़ता है। शादी के बाद पहिना जाता है तो बहुत खुशी की जाती है अपनी जाति के मर्द औरतों को गोठ दी जाती है। गाना बजाना भी होता है, क्वांरी लड़कियां हाथी दांत का चूड़ा नहीं पाहिनतीं मूठ पहनती हैं। चूड़े और मूंठ में यह फर्क है कि मूंठ तो बाहों में ही

पहिनी जाती है और चूड़ा बाहों और भुजाओं में। इसी तरह क्वांरी लड़कियां गहने में तमनिया, नथ, बाजूबंद, और कपड़ों में कांचली भी नहीं पहिनती हैं, व्याह के पीछे सब तरह का गहना सोने चांदी का पहिन सकती हैं।

विधवा औरत हाथी दांत का चूड़ा नहीं पाहिनती और जो पहिने होती है उसको भी खावंद के मरे पीछे बारहवें दिन फोड़ डालती है। विधवा कपड़े भी पक्के रंग के लाल या काले पहनती हैं घागरा लाल लुंगी का, कांचली और डुपट्टा काले रंग का। विधवां की कांचली की बाहें लांबी होती हैं औरत के वास्ते लांबी कांचली पहनने की मारवाड़ में गाली है।

औरतों में बदन गुदाने का रिवाज़ बहुत कम है। सोने की मेखें दांतों में खूबसूरती के वास्ते छेद करा कर अकसर लगाई जाती हैं।

विशेष बातें।

१ ईंदों की गिनती मारवाड़ में ३-४ हजार के लगभग है। इनको मारवाड़ में तो ईंदा ही कहते हैं। गुजरात और मालवे में पड़िहार कहते हैं।

२ ज़मींदारी, खेती और नौकरी का काम है।

३ ईंदों के ऊपर बिजली नहीं पड़ती खाखूजी पर १ वार पड़ी थी तो वह उसको ढाल के नीचे दाब

कर बैठ गये थे क्योंकि बड़े बलवान और करामाती थे और फिर उसको यह बचन लेकर छोड़ा था कि कभी उनकी औलाद पर नहीं गिरेगी।

४ चामुंडा माता के बरदान से ईंदा वाटी में मरी नहीं आती बल्कि जो कोई बाहर से मरी में आकर ईंदा वाटी के झाड़ों के नीचे आ पहुंचता है तो बच जाता है। रामसाह पीर के मेले में जब मरी पड़ती है तो लोग वहां से भाग कर माता जी की शरण लेने के लिये ईंदा वाटी में आ जाते हैं।

५ ईंदावाटी में आस पास के इलाके से जियादा पाभी भी चामुंडा माता के बरदान से ही है।

६ चामुंडाजी ने खाखूजी को यह भी बरदान दिया था कि तुम्हारे वंश का कोई आदमी मयान से तलवार निकाल कर खड़ा हो जावेगा तो मैं उस के साथ रहूंगी और उस को जिता दूंगी।

७ ईंदों की बेटियां ज़ियादा और जल्दी विधवा होती हैं क्योंकि मलारिया वोहरों का सराप है।

८ नाड़राव और गोपालजी पित्र माने जाते हैं। नाड़ राव का थान मंडोवर के किले पर और गोपाल जी का गोपालसर में है।

गोपालजी के थान पर माघ सुदी २ और भादों सुदी २ को हर साल मेला होता है यह मेला ईंदों का है। इस में यही लोग ज़ियादा जाते हैं। चूरमा—

नारयल और बकरे चढ़ाते हैं। गोपालजी के पुजारी शामी हैं।

९ कुलदेवी चामुंडा माता हैं। उन का मेला गांव बालेसर, वस्तवे, और भालू में होता है। उस में भी ईंदा लोग जियादा जाते हैं।

१० होली, आखातीज, दसहरे, और दिवाली को तिवहार मान कर आपस में अमल पानी और दारू की मनुहार करते हैं।

११ गाय, चील, घोड़े, और काले सांप को पूजते हैं, रूपारेल, (सफेद चिड़ियां) उल्लू और कोचरी के शकुन लेते हैं।

१२ गाय, कबूंतर, रूपारेल, उल्लू, चील, मोर को नहीं मारते। बड़, पीपल, नीम, रोहीडे को न काटते और न सूखे को जलाते हैं।

पीपल बड़ और नीम में तो ब्रह्मा विष्णु महेस का बासा समझते हैं और रोहीड़े को भील समझ कर नहीं काटते।

महाभारत की लड़ाई में श्री कृष्णजी ने १ भील का सर काट कर १ सूखे पेड़ पर रख दिया था जो उस के लोहू से हरा हो गया और रोहीड़ा कहलाया। श्रीकृष्णजी ने उस के काटने को मने किया है जो कोई काटता है उस का बुरा हो जाता है और यह पेड़ जब कट कर गिरता है तो उस में से १ बुरी तरह

की आवाज जो रोने की सी होती है निकलती है। उस के सुनने से आदमी के दिल में दया और करुणा आजाती है।

ईदरें के इतिहास।

पीढ़ियें तो भाटों की बहियों में लिखी जातीं हैं और शेरगढ़ परगने के गांव बेराई के चारण चम्मा ने बीन और नाड़राव वग़ेरा बड़े २ पड़िहार राजाओं का जस कई छंदों में कहा है और एक गोपाल ग्रंथ भी बनाया है। जिस में ईदाजी के बेटे गोपालजी का हाल है, जो मांडू शहर में अदालत के काम पर रहा करते थे और वहीं गूजरों से जो गुजरात का राज करतें थे लड़ कर काम आये। यह ग्रंथ गांव बराई में चम्मा के भाई नवला के पास मौजूद है।

और १ ख्यात जिस को नीसानी कहते हैं, भाटों की बही में लिखी है। राना ऊगमसी और चूंडाजी से जो बचन कचन हुवे थे, वे सब उस ख्यात में हैं।

भाट।

ईंदों के भाट गांव भालू परगने शेर गढ़ और गांव भदोरा परगने नागोर में रहते हैं। वही इन की पीढ़ियां लिखते हैं और जस भी करते हैं जिस का दस्तूर उन को मिला करता है।

चारण।

पड़िहारों के पुराने पौलपात चारण तो आसिया जाति के थे, मगर नाड़राव के बेटे धूम कुंवर को १ आसिया चारण चौपड़ खेलते हुवे तकरार हो जाने पर मार कर भाग गया जिस की शाखी का यह दोहा कहा जाता है।

धूम कुंवर ने मारियो, चोपड़ पासे चौल।
उण दिन छूटी आसिया, पाड़िहारांरी पौल॥

अर्थात् धूमकुंवर को चौपड़ पासे के खेल की चौल में मारा, उस दिन पड़िहारों की पौल आसियों से छूटी।

फिर संडाईच जाति के चारण पाड़िहारों के पोल-पात हुवे जो नाड़राव पड़िहार के दिये हुवे गांव मोगड़ा परगने जोधपुर में रहते हैं।

संडायच चारणों को ईंदा लोग भी कई पीढ़ियों तक तो मानते रहे थे, फिर राना बीभल के बेटे

राना रावत ने उमर कोट के रहने वाले लालस जाति के चारण रानायत को, जो उन की रानी सोढ़ी जी का विद्या गुरू था, अपना पौलपात बनाया और सोहरी गांव शासन दिया फिर सखराजी ने राणायत की औलाद को दूसरा गांव जुड़िया इनायत किया। अब इन दोनों गांवों के लालस चारण ईंदों के पौल-पात हैं और सगाई व्याह में जो नेग दस्तूर पौलपात चारणों का लगता है, सो सब येही लोग लेते हैं।

पुरोहित।

ईंदों के पुराने पुरोहित तो मलारिया जाति के पुष्करण ब्राह्मण थे। जब राना राजा ने उन को आग में जला दिया और उन की जाति के कुल मलारिया बोहरों ने इन के मरने पर गाने में आने जाने की तलाक खेंच ली तो राना राजा ने अपनी बहन को लिख कर गांव राताकोट इलाके अजमेर से एक लूले लंगड़े गूजर गौड़ ब्राह्मण को बुलाया और बड़े मुश-किल से पुरोहित होने पर राज़ी किया। उस ने पहिले राना के बराबर सोना तोल कर ज़मीन में गाड़ा* और उस पर ब्रह्महत्या उतारने के लिये होम किया, फिर पुरोहिताई ली। उस दिन से गूजर गौड़ ब्राह्मण ईंदों के

---

* कहते हैं इस सोने को बांग भारती नाम एक स्वामी उखाड़ ले गया। जिस से उस ने गांव बड़ाल में एक बड़ा मकान बनाया है।

पुरोहित हैं। उस लूले गूजर गौड़ की औलाद ईंदों के गांवों में रहती है और पुरोहिताई के काम करती कराती है, मगर नीबारा गांव में कोई गूजर गौड़ ब्रह्मण नहीं रहता, जहां ब्रह्महत्या उतारने को होम किया गया था। मलारिया बोहरे अब तक ईंदों के गांवों में नहीं आते हैं। और रस्ते चलते भी उन के कुवों का पानी नहीं पीते। अगर कोई ईंदा उन को प्रणाम करे और उन्हें मालूम हो जावे कि यह ईंदा है तो आशीर्बाद भी नहीं देते और "हे हत्यारा" कह कर चले * जाते हैं।

गुरु।

थेटू गुरु पड़िहारों के समय से गांव पालड़ी + के नाथ थे, परन्तु महाराजा मानसिंहजी के राज में नाथों

---

* सन् १८९१ की मरदुमशुमारी में मुझे मालूम हुआ था कि परगने फलोदी में लाधूराम नाम मलारिया बोहरा शुमारकुनिंदा है। फलोधी पहुंचने पर मैं ने उस को बुलाया और करण सिंह ईंदा से इशारा किया तो उस ने कहा 'पगेलागूं महाराज'। लादूराम ने पूछा तुम कौन हो। करणसिंह ने कहा ईंदा हूं। यह सुन कर उस ने आशीर्बाद नहीं दिया, मुंह फेर लिया और कहा कि जो किसी कुवे पर हमारा ऊंट पानी पीता हो और हमें मालूम हो जावे कि यह इन का कुवा है तो हम उसी वक्त ऊंट का मुंह खेंच लेंगे और वहां से चल देंगे।

+ यह गांव परगने जोधपुर में है और नाथों को नाड़सत का दिया हुआ कहा जाता है।

का ऐश्वर्य वढ़ जाने से उन लोगों ने इन से गुरु चेले का संबंध छोड़ दिया, तो इन्हों ने भारती जाति के शामियों को अपना गुरु बना लिया। जो दो तीन पीढ़ी से इन के कान फूंकते हैं और गांव बस्तवे में बसते हैं। मगर बालेसर के ईंदों के गुरु गिरिजाति के शामी हैं, जो चामुंडा माता के पुजारी हैं और वहीं रहते हैं।

यहां यह भी लिख देते हैं कि ईंदा लोग पुरोहितों से पहिले तो पगे लागना (पालागन) करते हैं और वे आसरीबाद (आशीर्वाद) देते हैं और गुरु से कहतें हैं निमोनारायण, और वे जबाब में नारायण हरि कहते हैं।

सुबराज।

भाट चारण और ढोली से पहिले कुछ नहीं कहते, वेही सुबराज बोलते हैं।

भाटों का सुबराज यह है :—

"फलाणसिंह फलाण सिंहोत करसां की कारण दातार अन्नदाता हाथियां बखसन।"

अर्थात् ऊंटो घोड़ों के देनेवाले अन्नदाता हाथियों के बखशने वाले। इसी तरह कई पीढ़ियों का नाम लेकर सुबराज करते हैं। जब भाट लोग इस तौर से

सुबराज कर चुकते हैं तो, ये उठ कर उन से मिलते हैं और कहते हैं "मुजरो शाय आओ रावजी"।

अर्थात् सलाम साहिब आओ राव (भाट) जी

चारणों का सुबराज यह है " धनी अपमाल सरणायांसाधार चोरासीरा रांण अन्नदाता "।

अर्थात् मालिक शरणागतों के आधार ८४ गांवों के राना-अन्नदाता।

फिर ये उन को भी भाटों की तरह से मुजराकर के और आओ शाय बारहटजी कह कर मिलते हैं।

ढोलियों का सुबराज, कई पीढ़ियों का नाम लेकर "अन्नदाता ग़रीबनवाज कहना" और ये दोहे पढ़ना है।

दोहा।

इंदा समहर ऊजला सो जाने संसार।
मेसां* आगल मरु धरा वाली तीनों बार (१)
राणे भागा रामचंद खा गांई सफ़ ख़ान।
असप पडाऊ आणिया जाणे सेंग जहान (२)

अर्थ।

इंदा सब में उजले (उज्ज्वल) हैं (इस को) सब

* म्लेच्छ।

संसार जानता है, इन्हों ने मुसलमानों से मारवाड़ ३ बेर पीछीली है (१)

राना रामचंद ने तलवारों से युसुफ़ख़ान को मारा और उस के घोड़े छीन लिये, इस को सारा जहान जानता है (२)

सुबराज के पीछे ये उन से बैठे २ ही राम राम कर लेते हैं।

—•—

दूसरा भाग ।

आईन अकबरी में पड़िहार ।

आईन अकबरी के तीसरे दफतर में जहां उस समय के राजपूतों की संख्या लिखी है वहां पड़िहारों के सवारों की संख्या ५,००० और पैदलों की १०००० है। ये १५,००० पड़िहार जमींदारों वा भोमियों तथा जागीरदारों की गिनती में थे और इन की भूमि वा जागीर कहां २ थी इस का भी उसी ग्रंथ के दूसरे दफतर से जिस में भारत के भूगोल का वृत्तान्त राज्यशासन के विभागों की विधि से लिखा है, पता लग सकता है। ये नीचे के कोठे पड़िहारों की जमींदरी और सवार पैदलों की संख्या के उसी में से भरे गये हैं :—

सं॰	नामसूबा	नामसरकार	नाम महाल वा परगना	पड़िहारों की संख्या			सूचना
				सवार	पैदल	हाथी	
१	आगरा	कालपो	खंडोत	५०	४००	०	
२	"	"	पांडोर	१००	२०००	५	
३	"	"	महोबी	१००	१०००	१०	
४	"	"	बिबाई	४००	३०००	०	
५	"	"	सिंहाणा	४००	१०००	०	यह संख्या पड़िहार और तंवर दोनों की है।
६	इलाहाबास	कालंजर	खडवाला	४००	५०००	१०	यह संख्या पड़िहारों और सेयदों दोनों की है।
७	"	"	मोधागा	२०	४००	०	इस संख्या में रहम-तखिंदी जाति के सवार पैदल भी मिले हुए हैं।

इस संख्या की जोड़ ऊपर लिखी हुई १५००० की संख्या से कुछ कम आती है, सो या तो इस के सिवाय और भी कहीं पड़िहार रहें होंगे जो उस ग्रंथ में ही नहीं लिखे गये। क्योंकि बहुत जगह केवल राजपूत लिख कर ही उन की जाति का नाम नहीं खोला है कि कौन राजपूत, या हमारे देखने से रह गये हैं। किस लिये कि बड़ा भारी ग्रंथ है और जिन परगनों में दूसरी जाति के लोगों की संख्या भी इन में मिली हुई है उस के लिये

यह समझना चाहिये कि वे भी वहां के ज़मींदार वा जागीरदार थे।

ग्वालियर में पड़िहार।

मेजर जैबीकीथ साहिब ने ग्वालियर के किले का पुराना हाल एक अंगरेजी किताब में लिखा है, उस में पड़िहारों के राज का भी थोड़ा सा ब्योरा आया है जो इस तौर पर है।

कछवाहों का राज ग्वालियर में सन् २५७ से ११२९ (संवत् ३३२ से ११८६) तक ८५४ वर्ष रहा, जिस का आरम्भ राजा सूरजपाल से हुआ था। पिछला राजा तेजकरण था, उस के पीछे उस का भानजा परमलदेव राजा हुआ जो पड़िहार जाति का था। पड़िहारों ने १०३ वर्ष राज किया, अन्तिम राजा सारंगदेव था जो सन् १२३२ (सं० १३०६) में मारा गया जब कि अलतमश (सुलतान शमशुद्दीन) ने चढ़ाई करके ग्वालियर का क़िला फ़तह किया था।

चंबल पर पड़िहार।

ग्वालियर के पड़िहारों के बाबत उर्दू किताब छत्रीदलथंभण में कुछ थोड़ासा करनल टॉड की तवारीख़ राजस्थान से लिखा है वह भी हम यह यहां लिखते हैं।

मंडोवर जिसे मंदाद्री भी कहते हैं, पड़िहारों का राजस्थान था, यह प्रसिद्ध नगर मारवाड़ में है जो राठौड़ों से पहिले पड़िहारों के नीचे था, वह जैपुर (जोधपुर) से ५ मील उत्तर में है। उनके पुराने पाली अचरों और टूटे हुए जैन मंदिरों के नमूने मौजूद हैं। कन्नौज के राजाओं और राठौड़ों ने आकर पड़िहारों की शरण ली थी, परन्तु उन्हों ने अपने शरण देनेवालों से छल कपट कियां और उन से बुरा बरताव बरता।

चूंडा ने जो राठौड़ों के इतिहास में प्रसिद्ध हैं, मंडोर (मंडोवर) का क़िला पड़िहार के सब से पिछले राजा से छीन लिया। पड़िहारों का राज तो पहिले ही मेवाड़ के राजों की चढ़ाइयों से घट गया था जिन्हों ने उस के बहुत से परगनों में अपना अमल कर लिया था, और अपने को राना की पदवी से प्रसिद्ध किया था। अंगरेजी सन् की तेरहवीं सदी में चित्तौड़ के रावल ने मंडोवर जीत कर वहां के राजा को मार दिया था, जिस से पड़िहार बिखर कर सब रजवाड़ों में फैल गये। कोहारी और चंबल नदी के संगम पर इस जाति की एक नई बस्ती विद्यमान है और २४ गांव जो इन नदियों के नालों पर बसते हैं वे इसी नाम (पड़िहारों के नाम) से प्रसिद्ध हैं और सेन्धिया के नाम मात्र अधीन हैं। परन्तु चंबल का रस्ता चल्लू रखने के लिये यह उचित समझा गया था कि वे अंगरेजी सरकार के राज में

आ जावे और इसी से वह ठगों (धाड़ेतियों) का दल जो ठगों (धाड़ेतियों) के इतिहास में विख्यात है, अंगरेजों की ताबेदारी में आ गया।

*पड़िहारों की १२ शाखायें हैं जिन में इंद वह (इंदा) और सिंधल प्रसिद्ध हैं इन में कई लूणी नदी पर रहते हैं।

मुसलमानों की तवारीख से।

तबकातनासिरी और फरिशता नाम फ़ारसी तवारीख़ों से जाना जाता है कि जब संवत् १२४६ में पृथ्वीराज चौहान के पीछे मुसलमानों का राज दिल्ली में हुआ तो कुतुबुद्दीन ऐबक ने सन् ५६२ (संवत् १२५२) में बयाने का क़िला फ़तह करके ग्वालियर पर चढ़ाई की। वहां के राजा सलंकमन ने कर देना कबूल करके बहुतसा रुपया भेट किया।

कुतुबुद्दीन ने बहाउद्दीन तुग़रल को बयाना में रखा था। वह बारम्बार ग्वालियर पर चढ़ाई करता था लेकिन कुछ काम नहीं सरता था। तब उस ने ग्वालियर से दो कोस पर सुलतान कोट नाम एक क़िला बनाकर एक वर्ष तक ग्वालियर पर बहुत जोर डाला। तब क़िलेवालों ने तंग होकर कुतुबुद्दीन के पास बहुत सा माल भेजा और उस को क़िला देना ठहराया। इस पर कुतुबुद्दीन और बहाउद्दीन में बिगाड़ होकर

लड़ाई होने तक नौबत पहुंची गई थी, परन्तु बहाउद्दीन उन्हीं दिनों में मर गया और ग्वालियरवालों ने कुतुबुद्दीन को क़िला सौंप दिया।

कुतुबुद्दीन के पीछे शमशुद्दीन ने सन् ६२६ (संवत् १२८६) में चढ़ाई करके ग्वालियर का क़िला घेरा, जो कुतुबुद्दीन के पीछे मुसलमानों के हाथ से जाता रहा था। जब क़िलेवाले तंग हो गये तो वहां का राजा देवमल रात को भाग गया। क़िला सन् ६३० (संवत् १२६०) में सुलतान के हाथ आगया, बहुत आदमी मारे गये।

इन तवारीखों में ग्वालियर के राजाओं की जाति तो नहीं लिखी है परन्तु वे पड़िहार ही थे जैसा कि ऊपर कीथ साहिब की किताब से लिख आये हैं। नामों में अलबत्ता फ़र्क़ है।

बुंदेलखंड के पड़िहार।

जिस देश को अब बुंदेल जाति के रहने से बुंदेलखंड कहते हैं वह पहिले गोंडवाणा कहलाता था क्योंकि गोंड लोग उस में रहते और राज करते थे। गोंडों से पहिले चंदेल राजपूतों का राज था और तब इस देश का नाम जझोती * था जो चंदेल राजा जेजाक का राज हो जाने से प्रसिद्ध हुआ था। चंदेलों से पहिले यहां पड़िहार राज करते थे। यह बात दंतकथाओं

* जझोतिया ब्राह्मण जो बुंदेलखंड में बहुत हैं, इसी जझोती के रहने वाले थे।

में भी कही जाती है कि चंदेलों ने पड़िहारों की पृथ्वी ली थी और नागोद की वंशावली से भी जानी जाती है।

बुंदेलखंड में भी पड़िहार मारवाड़ से ही गये थे परन्तु ठीक समय उन के वहां जाने का नहीं जाना जाता। नागोद की बंशावली में संबत् १४०१ से १० पीढ़ी पहिले भीमपाल का मारवाड़ से महोवे में पहुंचना और ७ वीं पीढ़ी में चंदेलों का जोर बढ़ जाने पर महप सिंह से महोवा छूट जाना लिखा है। सो सही नहीं मालूम होता, क्योंकि भीमपाल से भूपाल तक जो संवत् १४०१ में था १० राजा लिखे हैं और ये जियादा से जियादा २०० बर्ष में हुवे होंगे। इस लेखे से भीमपाल संवत् १२०० के लग भग होता है और महपसिंह जो वंशावली में उस से ७ पीढ़ी पीछे है संवत् १३५० के आस पास होगा और यह वह समय है कि चंदेलों का राज जाता रहा था या जाने वाला था और चंदेलों के समय के शिलालेख महोवे में संवत् १२५२ तक मिलते हैं इन बातों से जाना जाता है कि चंदेलों से पड़िहारों ने संवत १३५० वा महपसिंह के बहुत पहिले महोवा ले लिया था।

रीवां राज्य के सिवाय बुंदेल खंड में पड़िहारों की कुछ जमींदारी भी जुगनी से कालपी तक हैं और ये पड़िहार पुराने पड़िहारों के वंश में कहे जाते हैं जिन

का राज्य चंदेरी से सागर तक था और उच्छे में राजधानी थी, वह जब चंदेलों ने छीन ली तो पड़िहार उन के नौकर हो गये और जो उन की जागीरें थीं वे जमींदारी के तौर पर उन के पास रह गई।

इन विविध वर्णनों से जाना जाता है कि नागोद के पड़िहार उदे के पड़िहारों से पीछे बुंदेल खंड में गये हैं।

नागोद के पड़िहार राजों का हाल

*बुंदेलखंड की उर्दू तवारीख़ से।

यह रियासत जो बघेलखंड की रियासतों में दूसरे दरजे की है, बहुत पुरानी है। ठीक समय तो इस की स्थापना का किसी मोतबर तवारीख़ के मौजूद न होने से मालूम नहीं होता पर अटकल से प्राय १००० बरस तो हुवे हैं। यहां के राजों का हाल जितना कुछ ढूंढने से जाना गया है वह यहां लिखा जाता है। उछेरा और नागोद की गद्दी पर बैठने वाले अपनी वंश परम्परा राजा पलह से बताते हैं जो आबू पहाड़ के शिखिर पर ब्राह्मणों की बेदी में से पैदा हुआ था। पलह से जो पड़िहारों का मूल पुरुष माना गया है, भीमपाल तक ६१ राजा एक के पीछे एक गद्दी पर बैठते रहे। मारवाड़ में इन का बड़ा राज था। ये सब आबू शिखर पर राज करते थे। नाम इन के ये हैं :—

१ पलह	२४ भोलभन
२ पदमराज	२५ बेनराज
३ धूममल	२६ गहलकर्ण
४ पृथ्वीराज	२७ बेघराज
५ प्रमथधीरराज	२८ बांधराज
६ जगदनरेंद्र	२९ गयंदराज
७ विंध्यराज	३० तूहीराज
८ इंद्रमान	३१ बेहरराज
९ माघसिंह	३२ भलराव
१० मेघकरण	३३ अजेदेव
११ कुशलराज	३४ सिंहराव
१२ सूरमा	३५ गोपेन्द्र
१३ भूरभान	३६ कुंभकराव
१४ इंद्रराज	३७ कलनराव
१५ दुर्गपाल	३८ अधमपाल
१६ भल्लराज	३९ सोमपाल
१७ गरघव	४० विहंगपाल
१८ देवराज	४१ भूमिपाल
१९ दानभुज	४२ सिद्धपाल
२० जोगेन्द्रराज	४३ रोहनपाल
२१ चंद्रराज	४४ अजयपाल
२२ दीनराज	४५ परमपाल
२३ बालिराज	४६ राजपाल

४७ वंशपाल
४८ बलपाल
४९ चेनपाल
५० लोकपाल
५१ छेत्रपाल
५२ बिंधुपाल
५३ अमरपाल
५४ रामपाल
५५ गंभीरपाल
५६ नारायणपाल
५७ नाणपाल
५८ सुखपाल
५९ जानपाल
६० मदनपाल

६१ भीमपाल-इस के समय में जब राजपूताने के दूसरे राजों का उस देश में जोर बढ़ा और पड़िहारों का राज निर्बल हो गया तो वे वहां से चल कर बुंदेलखंड की तरफ़ आये और महोबे में पहुंचे। भीमपाल का बेटा शुक्रपाल वहां के राजा को निकाल कर आप राजा बन बैठा।

६२ शुक्रपाल
६३ सहमपाल
६४ सेनपाल
६५ रुतपाल
६६ ऊदपाल

६७ महपसिंह—शुक्रपाल से यहां तक ६ पीढ़ी चंदेलों के मेल से राज करती रहीं। फिर चंदेलों से बिगाड़ और उन का ज़ोर हो जाने से पड़िहार गंजगढ़ी में चले आये, जहां उन का क़बज़ा था, महोबे के पश्चिम में जो मुल्क था वह तो हाथ से निकल

गया केवल कोटड़े का परगना उन के पास रहा। जो ३ लाख रुपये की जमा का था।

६८ सधरमल

६६ रामसिंह

७० महीपाल

७१ भूपाल—यहां तक सधरपाल से लेकर ४ राजा कोटड़े में संवत् १४०१ तक राज करते रहे। फिर एक तेली राजा को जो किलेनरु परगने दुर्जनपुर में राज करता था, तलवार के जोर से जीत कर ४ लाख रुपये के मुल्क के मालिक हो गये। और इस तरह सात लाख का मुल्क पड़िहारों के पास हो गया। जब बघेलों का ज़ोर हुआ तो उन्होंने नरु का क़िला वहां के किलेदार से छीन लिया और दोनों रयासतों की सीमा तोनस नदी पर ठहर गई।

उन्हीं दिनों में पड़िहार राजा मर गया। उस का लड़का छोटा था और दूसरा लड़का हरम अर्थात् घर में डाली हुई औरत से था, वह बाप के जीतेजी राज का सारा काम करता था, फौज और सब परवाह उस से मिली हुई थी, इसलिये उस ने चाहा कि उस असली बच्चे को मार कर आपही राज का मालिक बन जावे। परन्तु जब प्रभु की कृपा होतो बैरी क्या कर सकता है। गांव कचलवाहा और बरगाही में जो पड़िहार

रहते थे वे असली मालिक की जान बचाना उचित समझ कर उस को शिकार के बहाने से गांव बाटिया की गढ़ी में ले आये और दुशमन को तलवार के ज़ोर से निकालने के लिये फ़ौज ज़मा करने लगे। लेकिन लड़ाई की नौबत नहीं पहुंची और पंचायत होकर यह बात ठहरी कि बरमी का राज तो (जो अब नागाद के नीचे है) असली मालिक के नाम पर रहे और कोटड़े का इलाक़ा दूसरा कमअसल लड़का रखे। जब से अब तक नागोद का मुल्क तो नागोद के राजाओं के नीचे है पर आज कल उतनी आमदनी का नहीं है। बीच २ में कम होता रहा है और कुछ इस बटवाड़े से भी घट गया था। वह लड़का भी बहुत बरसों तक राज भोगता रहा फिर जब बुंदेलों का ज़ोर बढ़ा तो कोटड़ा बुंदेलखंड में मिल गया और नागोद का राज वैसाही बना रहा।

थोड़े दिनों पीछेही रीवां और नागोद के राजों में बिरादरी का सा संबंध हो गया।

७२ तेजपाल
७३ मानपाल
७४ इन्द्रपाल
७५ भेखपाल
७६ जाहरपाल
७७ जगतपाल
७८ सोमपाल
७९ भोजपाल
८० मझकरसाह
८१ भोजराज—इस ने

संवत् १५३५ में ओचहरा बसाया उस की औलाद ओचहरे का राजा कहलाई।

८२ कल्हनसिंह

८३ प्रतापरुद्र—इस के समय में बादशाही सूबेदार ने जो एक हबशी था फौज लेकर रीवां पर चढ़ाई की तो इस ने रीवां के राजा की मदद पर पहुंच कर लड़ाई में सूबेदार को ज़ख्मी किया जिस के बदले में रीवां के राजा ने इस को १२ गांव दिये।

८४ नरना सिंह (निर्णय सिंह)

८५ भारतसाह

८६ पृथ्वीराज

८७ फ़क़ीर साह—यहां तक ये सब राजा उचहरे में रहे। पृथ्वीराज के १८ बेटे हुवे, बड़ा बेटा फ़क़ीर साह गद्दी पर बैठा। बाकी १७ बेटों में से जो जीते रहे थे उन्हों ने राज से हिस्सा पाया। मगर नाम उन के मालूम नहीं हुवे। फ़क़ीरसाह के तीन बेटे हुवे, बड़ा बेटा चेन सिंह था, दूसरा नरहर साह, जिस को जगनहट आदि १६ गांव ४३७५) की जमा के मिले। तीसरा बखतावर सिंह था जिसे छोटे लाल भी कहते थे। उस ने कोंधरी आदि ३ गांव १३५० की जमा के पाये।

८८ चेन सिंह—इस ने संवत् १७७७ में नागोद बसाया

और इसलिये आगे को उस के बेटे पोते उचहरा और नागोद के राजा कहलाने लगे।

८९ अहलाद सिंह-इस के ३ बेटे शिवराज सिंह, दलबाघ सिंह और महपाल सिंह थे। शिवराज सिंह गद्दी पर बैठा। दलबाघ सिंह को अमरहट आदि १६ गांव ४१७५) के और महपाल सिंह को पनोरा आदि १३ गांव ३६७१) के मिले।

९० शिवराज सिंह—इस के समय में बस्सी के अहदनामें से बुंदेलखंड पर अंगरेजी क़बज़ा हुआ। तब पहिलें तो नागोद सुहावल और कोठी की सनद (पन्नाके) राजा किशोर सिंह को मिल गई। मगर जब तहक़ीक़ात से यह बात साबित हुई कि राजा छत्रसाल (बुंदेले) के पहिले से लाल शिवराज सिंह क़े दादे परदादे इस रेयास्तत को भोगते आते हैं, बुंदेले राजों और नवाब अली बहादुर के राज में कभी बेदख़ल नहीं हुवे तो २० मार्च सन् १८०९ ई० (१९ चैत सन् १२१६ फ़सली) को लालशिवराजसिंह के नाम दूसरी सनद हो गई जिस से ४०१ गांव क़बज़े में आये और ३ पीछे से बसे। उन ४०४ गावों से १८२ ख़ालिसा और २२२ अोबरीदारों और भाइयों के पास हैं जिन की आमदनी राज की आमदनी से ज़ियादा है सन् १८१८ (संवत् १८७५) में शिवराजसिंह का देहांत

हो गया। उस के ३ बेटे बलभद्रसिंह, जगतधारीसिंह और नारायण बख़्शसिंह थे। बड़ा बेटा बलभद्रसिंह राजा हुआ, मंझले को करही आदि २१ गांव ७१७५) के और छोटे को सतपुरा आदि १६ गांव ६१०१) के मिले।

६१ बलभद्र सिंह—इस ने अपने भाई जगतधारी सिंह को सन् १८३१ (संवत् १८८८) में मार डाला। इसलिये गद्दी से उतार कर इलाहाबाद में रखा गया। कुंवर राघवेन्द्र सिंह बालक था जिस से सरकार ने कुछ दिनों के लिये राज का बंदोबस्त अपने हाथ में रखा।

६२ राघवेन्द्र सिंह—इसे मौलवी हैदरअली ने तालीम दी थी। जवान होने पर बुंदेलखंड के एजेंट गवर्नर ज़नरल सरचार्लिस फ्रेजरसाहिब के सामने लाया गया और नागोद का राज उन्हीं शर्तों पर जो उस के दादा से हुई थीं ८०००) नज़राना लेने के पीछे उस को सौंप दिया गया। परन्तु उस से रियासत का बंदोबस्त अच्छी तरह से नहीं हो सका। फ़ज़ूलख़र्ची और बे बन्दोबस्ती से रयासत पर बहुत करज़ा हो गया और भाई बन्दों ने भी हुंदम्चाया। तब राजा ने २३ नवम्बर १८४३ को ख़त भेज कर सरकारी बंदोबस्त करांना चाहा, जिस पर लाट साहिब के २३ नवम्बर सन् १८४३

(सम्बत १६००) के हुक्म से नागोद में सरकारी बन्दोबस्त होकर राजा का १५००) महीना ठहरा परन्तु राज्य की थोड़ी आमदनी होने से १०००) महीनाही १ जनवरी १८४४ (संवत् १६०० के पौस) से दिया गया। फिर करजा उतर गया तो १ अगस्त सन् १८५० (संवत् १६०७) से, १३००) महीना मिलने लगा। सन् १८५७ (संवत् १६१४) के गदर में राजा ने अच्छी नौकरी दी जिस से सरकार ने विजयराघवगढ़ की जागीर में से, जो जब्त हो गई थी, ११ गांव ४०००) की जमा के इनायत किये। मगर उन का बंदोबस्त भी रियासत नागोद के शामिल सरकारी सुपरिनटेनडेंट के अधिकार में रहा। सन् १८६० (संवत् १६१७) में राजा साहिब को राज सौंप दिया गया।

राजा राघवेन्द्रसिंह अकलमंद और इलम पढ़े हुए थे वैद्यक विद्या में तो बहुत समर्थ और जानकार थे परन्तु नहीं मालूम कि क्यों पिछली अवस्था में सिड़ी जैसे हो गये थे। २२ फरवरी सन् १८७४ (संवत् १६३०) को जवान लड़के यादवेन्द्र सिंह को छोड़ कर मर गये और रियासत को बहुत करजदार छोड़ गये। १ लड़का विश्वेश्वर सिंह खवास से है परन्तु पड़िहारों के खानदान से बाहर है।

६३ यादवेन्द्र सिंह—बाप के पीछे गद्दी पर बैठे, यह

जवान होशयार और अक़्लमंद हैं। रियासत नागोद पोलिटिकेल एजेंट बघेलखंड, राजा, और कामदार के हाथ में है। नौकरों की तनख़ाह महीने के महीने बटती है। करजा चुकाने की भी खेवट हो रही है। अंगरेज़ी सरकार का क़रज़ा बहुत सा तो चुक गया है, चौथाई और रहा है। महाजनों का क़रज़ा भी बचत के अनुसार चुकाया जाता है। राजा का दिल राज की भलाई की तर्फ़ लगा हुआ है, अभी फ़ज़ूलख़र्ची पसन्द नहीं है।

१० जुरमों के सिवाय और सब फ़ौजदारी के मुक़द्दमों का अख़्तियार राजा को है। सलामी ६ तोपों की है। लिखा पढ़ी सेंट्रल इंडिया के एजेंट गवर्नरजनरल से होती है। साहिब की तरफ़ से राजा साहिब के नाम सादे काग़ज़ पर ख़त आता है जिस में यह अलक़ाब लिखा जाता है।

राजा साहिब मुसफ़िक़, मिहरबान दोस्तान सलामत। बाद इशतियाक़ मुलाक़ात मसर्रत आयात मशहूदराय मोहब्बत पैरायबाद (लिफ़ाफ़े पर) बमुताले ....मोसूलबाद।

ओबारीदार।

इस रियासत में ओबारीदार (जागीरदार) बहुत से हैं जिन में बड़े ८ हैं और बाक़ी छोटे।

१ सरोहां, सनद तो १००००) की थी मगर अब दूनी से ज़ियादा पैदा है। इन दिनों लालहरचंद ओबारीदार हैं।

२ सतपुरा, जब सनद मिली थी तब तो ६१०१) की जमा थी मगर अंगरेजी बन्दोबस्त में १००००) से ज़ियादा आमदनी हो गई क्योंकि लाल बिहारी बख़्श सिंह के बाप, दादे बहुत करजदार हो गये थे इस लिये यह इलाक़ा भी सरकारी इन्तजाम में रहा, और जब नागोद राजा को सौंपी गई तो यह भी छोड़ दिया गया। मगर अब दूसरे भाइयों की तरह से रक़म मांगी गई तो ओबारी नट गये। मुकद्दमा एजेंटी बुंदेलखंड में गया, आख़िर दरबार नागोद को डिगरी मिली। बख़शिश सिंह सन् १८७३ में १० वर्ष का लड़का हरिविक्रम सिंह छोड़ कर मर गये। उस समय अगले राजा का चित्त भ्रम हो रहा था, बे बंदोबस्ती की शिकायत ऊपर के हाकिमों तक पहुंची। पोलिटिकेल एजेंट ने सदर से मंजूरी मंगा कर सतपुरे में सुपरेन्टेन्डेंटी बैठा दी जो एजेन्टी के नीचे रही। ६ जून सन् १८७३ को मौलवी मुहम्मद उमेद ४०) महीने पर सुपरिन्टेन्डेन्ट हुवे। ४०) हरिविक्रम सिंह को, २०) उस की मा को और उतनाही खर्च दूसरी औरतों को देना ठहरा। कुल १००) महीना सुपरिन्टेन्डेन्टी का और १२०) असली मालिक और उस के घरवालों का ठहरा।

जब यह इलाका सरकारी इन्तजाम में आया था तो ३३११२) का करजा था, अजंटी का अधिकार हो गया तो भी राज की मामूली रकम दी जाती है। रईस को अजंटी के दखल होने से नाराज़ी है। मगर लाचारी से कुछ हठ नहीं किया गया।

३ पनोरा सनद में तो ३६७१) की है पर अब तिगुना रुपया बैठता है।

४ अमरहट की सनद ४२७५) की है मगर अब दूना रुपया बैठता है।

५ भटवाड़ा।

६ लहरूरां।

७ पीरूखर।

८ जगन हट।

इन के सिवाय जगतधारी सिंह की जागीर में गढ़ी थी जो उन के मारे जाने के पीछे खालसे में मिल गई।

नागोद की गद्दी पर बैठने वालों की सूची से जाना जाता है कि राजा पलह से जादवेन्द्र सिंह हाल के रईस तक ६३ पीढ़ियां हुई हैं। १००० वर्ष से महोबा में और ४०० वर्ष से ऊचहरे में राज करते रहे हैं।

उर्दू तवारीख सही फौज़रीन से।

राजा जादवेन्द्र सिंह नागोद।

जन्म ३० दिसम्बर सन् १८५५—राजतिलक के १२ जून सन् १८७४।

इस राज के रईस पड़िहार राजपूत हैं, यह घराना ६०० वर्ष से राज कर रहा है पिछले वर्षों में पन्नावालों के आधीन था परन्तु सन् १८०६ में राजा लाल सिव-राज सिंह ने अंगरेजी सरकार से सनद पाई।

राजा लाल शिवराज सिंह के पीछे सन् १८१८ में उन के बेटे बलभद्र सिंह गद्दी पर बैठे, सन् १८३८ में उन के बेटे राघवेन्द्र सिंह राजा हुवे। उन्हों ने गदर में खैरख्वाही की जिस के इनाम में बिजेराघोगढ़ के ११ गांव इनायत हुवे और १८६२ में दूसरी रियासतों की तरह से इन को भी गोद लेने की सनद मिली।

राघवेन्द्र सिंह सन् १८७४ में मरे तब उन के बेटे जादवेन्द्र सिंह १६ वर्ष की उमर में उन की जगह बैठे। फरवरी सन् १८८२ में इन को पूरे अख़्तियार मिले।

रियासत का रक़बा ५०१ मुरब्बा मील का है। आबादी ६७०६२ और आदमियों की और आमदनी १५००००) की है, जिस में से ७००००) जागीरों और मजहबी माफियों (पुण्यार्थ) में कट जाते हैं। सालामी ६ तोपों की हैं।

अलीपूरे के राव।

उर्दू तवारीख बुंदेलखंड से।

अचल सिंह पड़िहार पन्ना के राजा हृदय शाह के पोते हिन्दूपति के दीवान थे, जिन के अच्छे कामों से राजी होकर राजा हिन्दूपति ने एक बड़ी जागीर दी थी अचल सिंह के पीछे उन के इकलोते बेटे दीवान प्रताप सिंह उस जागीर के मालिक हुवे। जब नव्वाब अली बहादुर ने बुंदेलखंड में अपना अधिकार जमाया तो प्रताप सिंह उस के अधीन हो गये जिस से उस ने भी वह जागीर उन्हीं के पास रहने दी। फिर अंगरेजी अमलदारी आई तो सरकार ने भी उन से ताबेदारी का अहदनामा लिखा कर अलीपुरा उन्हीं के पास रहने दिया।

प्रताप सिंह के पीछे राव पंचम सिंह रईस हुवे जो १८ अकटूबर सन् १८३९ संवत् (१८९६) को मरे तब उन के बेटे राव दौलत सिंह गद्दी पर बैठे। वे एक वर्ष २ महीने और ४ दिन राज कर के जवानी में ही मर गये। उन के बेटे राव हिन्दूपति बहुत लायक और होनहार थे, उन्हों ने अपनी छोटी सी जागीर का खूब बन्दोबस्त किया। प्रजा को भी सुख दिया, खजाना भी जोड़ा। कुंवर छत्रपति को अंगरेजी पढ़ाई राव पंचम सिंह के भाई राव किशोर सिंह को थोड़ी सी जागीर

मिली थी जिस से उस के बेटे पोते फसाद किया करते थे। इन्हों ने एजेंटी की मारफत तहकीकात कराकर उन को ४२१०) की जमा का श्रीनगर नाम एक गांव और उन की जागीर में लगा दिया और संवत् १९१४ की गदर में अंगरेज़ी सरकार की बहुत अच्छी खैर-ख्वाही की जिस से खुश होकर सरकार ने इन को भी गोद लेने की सनद कर दी और गद्दी नसीनी का नजराना भी मुआफ कर दिया। मगर जो गोद लें तो चौथाई आमदनी मालगुजारी की सरकार में दें। इस के सिवाय ख़िलअत और १ तोप भी इनायत की। ता० २ नवंबर सन् १८७१ (संवत् १९२८) में राव हिन्दूपति का देहांत कमर में फोड़ा निकलने से हो गया। राव छत्रपति ने अपने बाप की जगह बैठ नया इन्तजाम किया। पिछले कामदारों को मौक़ूफ़ कर दिया। इन को सन् १८७७ के दिल्ली दर्बार में राव बहादुर का खिताब मिला।

अलीपुर का रकबा ९६ मील मुरब्बा मरदुमशुमारी १५००० आदमियों की है। २ तोप ५ गोलंदाज १० सवार १६५ पैदल और ५५ पुलिस के सिपाही राज में नौकर हैं।

२ सरीफे जरीन से ।

राव बहादुर छत्रपति जू देव सी. एस. आई. रईस अलीपुरा सन् १८५३ ई० में पैदा हुवे । ३ नवम्बर सन् १८७१ को गद्दी पर बैठे ।

आप के आम फायदे के कामों का बहुत ध्यान है । दिल्ली के कैसरी दरबार सन् १८७७ में आप को राव बहादुर का ख़िताब मिला था, फिर जब १८८७ में महारानी विक्टोरिया की जुबली हुई तो सरकार से सी. एस. आई. का तमगा इनायत हुआ । आप के राज में तालीम की बहुत तरक्की हुई । मदरसे और पक्की इमारतें बनी । आप के बड़े बेटे बली अहदहरपाल सिंह जी हैं जो १२ अगस्त १८८२ को पैदा हुवे थे । आपने श्रीमान् सातवें एडवर्ड कैसरे हिन्द के राजतिलक की खुशी में ४५ हजार रुपया पिछले वर्षों की बाकी का अपनी प्रजा को माफ़ कर दिया है । आप भी उस मौक़े पर सन् १६०२ ई० के दिल्ली दर्बार में बुलाये गये थे ।

राव हरपाल सिंह ।

अबराव हरपाल सिंह जू देव अलीपुर के रईस हैं ।

सोंधियों का हाल उर्दू तवारीख मालवे से।

ये कहते हैं कि मालवे में एक पड़िहार राजा था। देवी की पूजा बहुत करता था, इस के पास राजपूत पंवार, सोलंखी, चौहान, गहलोत, भाटी वग़ैरा नौकर थे। एक राजा इसे लड़ने को आया। काली सिंध नदी पर लड़ाई हुई, जिस में यह राजा मालवे का मारा गया। देवी ने आकर जिला दिया। पर इस ने देखा कि सब भाइ बन्द नौकर चाकर मरे पड़े हैं। देवी से कहा कि इन सब को भी जिला दो नहीं तो मुझे भी इन्हीं में मिला दो। देवी ने कहा कि सब के सिर धड़ से मिला, इस ने जल्दी और घबराहट में एक का सिर दूसरे में मिला दिया। देवी ने अमृत छिड़क दिया, सब जी उठे परन्तु सूरत सब की बदल गई, क्योंकि सिर और धड़ अदल बदल हो गये थे।

राजा ने देवी से कहा कि ये तो यों संध गये, देवी ने कहा कि यों ही सिंधे (जुड़े) रहने दे।

फिर उन के जो औलाद हुई उस से यह कौम सोंधिये की निकली।

राजपूत यों कहते हैं कि राजपूतों की औलाद जो लौंड़ियों और घर में डाली हुई औरतों से हुई और उन की व्याह सादी वैसे ही लोगों में हुई तो इस सांद (जोड़) से पंवार, भाटी, सोलंखी, बयड़ावत, गहलोत

और चौहान वग़ैरा राजपूतों की कमअसल औलाद मिल कर सोंधिया हो गई।

जिस मुल्क में ये लोग रहते हैं वह सोंधवाड़ा कहलाता है। सोंधिये "स" के "ह" बोलते हैं, जैसे किसी का नाम सालम सिंह हो तो हालम हिंग कहेंगें। इस का कारण एक सोंधिये ने यह बताया कि जब जयपुर का जयसिंह बादशाह के हुक्म से मालवे का सूबेदार हो कर आया तो उस ने अपने नाम के साथ सवाई लगाया पर बादशाह का बदख़्वाह था, ग़नीम यानी मरहटों से मिल गया था इस लिये हम लोग उसे हवाई जैहिंग कहने लगे। इस की ख़बर उस को भी हुई तो हम को बुला कर हवाई कहने का सबब पूछा, हम ने कहा कि हम को "स" बोलने नहीं आता है। "स" को "ह" बोलतें हैं यह कह कर जान बचाई। जब से सब "स" को "ह" ही बोलने लगे।

ये लोग उज्जैन से पूर्व और उत्तर की तर्फ़ रहते हैं। खेती करते हैं, चोरी धाड़ा और लूट भी अपने इलाके के आस पास करते रहते हैं, पर पक्के डाकुओं की तरह से अपने मुल्क से दूर नहीं जाते। सोंधवाड़े का बैल अच्छा होता है, गाड़ी में खूब चलता है।

पूर्व में पड़िहार ।

मलहाजनी जिला इटावा ॥

जिले इटावे में मलहाजनी नाम एक छोटी सी राजधानी पड़िहार राजपूतों की है। इन दिनों वहां के राजा प्रबल प्रताप सिंह हैं, इन का हाल सहीफे जर्रीन में इस तरह पर लिखा है कि आप २० अगस्त १८६७ को मलहाजनी में जनमें थे। आप पड़िहार राजपूत हैं। आप के मूल पुरुष महिपति सिंह मंत्र-सिद्धपुरा जिले जालोन से आये थे। इस घराने का रहवास ७५ वर्ष से इटावे के जिले में है। राजप्रबल प्रताप सिंह मंडोवर के राजों की सन्तान हैं जो पहिले पड़िहारों का राजस्थान था। इस घराने का स्थापित करनेवाला राजा जंगजीत सिंह था। राजा नरहर राव (नाड़राव) आप के दादा थे जिन का हाल टॉड साहिब की तवारीख राजस्थान में लिखा है।

मंडोवर में ४४ पीढ़ी राज करने के पीछे राजा सोमदेव उन राठौड़ों के हाथ से मारे गये जिन्हों ने कन्नौज का राज बिगड़ जाने के पीछे पड़िहारों की शरण ली थी।

सोमदेव के बेटे गंगपाल देव ने ग्वालियर के कछवाहा राजा तेज करण का राज ले लिया, उन के बेटों पोतों ने ३५ पीढ़ी तक वहां राज भोगा फिर सुल-

तान शमसुद्दीन ऐलतमश (दिल्ली के बादशाह) ने ग्वालियर पर चढ़ाई कर के राजा विजयपाल देव को हराया। उस के दूसरे बेटे जालिमदेव ने गांव सरसेर जिले हमीरपुर (बुंदेलखंड) में रह कर एक बड़ा इलाका जीत लिया जिस को उन की औलाद ३२ वर्ष तक भोगती रही, फिर पन्ना के राजा से लड़ाई हुई, जिस में सरसेर के राजा महा सिंह मारे गये उन के बेटे राजा दीप सिंह सिद्धपुर जिले जालोन में चले आये। उन के बेटे महिपति सिंह ने एक विवाह तो सिकरोली जिले इटावा के राना की बेटी से किया और दूसरा लाहायर के राजा की लड़की से। और मलहाजनी का इलाका मोल लेकर वहां निवास कर दिया।

राजा विजय सिंह जिन्हों ने भिनगा के राजा की लड़की से शादी की थी सन् १८५७ में अपने बाप महिपति सिंह के पीछे गद्दी पर बैठे। उन का देहान्त सन् १८६७ में हुआ, उस समय राजा प्रबलप्रताप सिंह बालक थे। इस वास्ते इलाक़ा कोर्टआफ़वार्डस को सौंपा गया जो सन् १८८८ में राजा साहिब के स्याने हो जाने पर छोड़ दिया गया।

राजा प्रबलप्रताप सिंह ने पहिले हाई स्कूल इटावे में और फिर बोर्डइन्स्टीट्यूट बनारस में इन्ट्रेन्स तक

शिक्षा पाई है, आप की शादी मुण मऊ जिले रायबरेली के ताल्लुकेदार राजा शिवपाल सिंह की राजकुमारी से हुई है।

राजा का खिताब कदीमी है। राजा साहिब के इलाके में ८ गांव जिले इटावा के और एक गांव जिले रायबरेली का है, रहबास मलहाजनी जिले इटावे में है।

शेष संग्रह।

पंजाब के पड़िहार।

ग्रन्थ समाप्त करने के पीछे पंजाब में भी पड़िहारों की खोज करने के लिये मैं ने २४ फरवरी १६१० के राजपूत गजट लाहोर में एक प्रश्न छपवाया था, आशा तो नहीं थी की शीघ्रही कोई उत्तर मिलेगा, क्योंकि राजपूतों में इतिहास की ओर ध्यान सब जगह ही कम है और पंजाब में तो राजपूतों के राज भी थोड़े हैं और उधर के राजपूत भी बहुत प्रसिद्ध नहीं हैं। परन्तु सौभाग्य से चौथे सप्ताह में ही २४ मार्च के राजपूत गजट में मियां ठाकुर सिंह जी तखी पड़िहार का जबाब छपा हुआ देखने आगया, फिर क्या था मैं ने अपने को कृतार्थ समझ कर दोरे में से ही तुरंत एक कार्ड उन महाशय जी की सेवा में भेजा और विस्तार पूर्वक उधर के पड़िहारों

का हाल पूछा, वह भी उन्हों ने कृपा कर के १७ अप्रेल १९१० के प्रेमपत्र में लिख भेजा जिस से जाना गया कि पंजाब में पड़िहार जाति के बहुत राजपूत सरदार हैं जिन के सविस्तर वृत्तान्त दरयाफ़ कर के भेजना उन उदार चित मिंया साहिब ने स्वीकार किया है। परन्तु यह काम जल्दी से हो जाने वाला नहीं है इस लिये अभी तो हम मियां ठाकुर सिंह जी के दोनों लेखों की नकल लिख कर अपने ग्रन्थ की पूर्ति करते हैं पीछे जब वे महाशय और वृत्तान्त भेजेंगे तो दूसरी आवृति में बढ़ा दिये जावेंगे।

१ राजपूत गजट २४ मार्च पेज ३ से—

जवाब इस्तफसार।

बजवाब इस्तफ़सार * २४ फरवरी १९१० पड़िहार राजपूत जिले कांगड़ा और हुशियार पुर में बहुत आबाद हैं। वे जसबाल ढोडवाल, कटोच, पठानिया, गुलेरिया वगेरे २ से रिशता † करते हैं और मारवाड़ से आये थे। मौजे हाय,‡ मोड़ी, मलाहू,बंदाहू, मंघड़, मलाओ, मोठली, मछड़, हड़, मघा, अनू, फलटा, जमल, गरनाड़ी, बला, भलोत, सोहरला, भियाव वगेरा २।

जिला हुशियारपुर मौजे ब्ररनवा, मौजे डोर, मौजे

---

* प्रश्न। † सबन्ध। ‡ गावों।

मुबारकपुर, मौजे दतारपुर पड़हारान, मौजे चमकोर और रियासत जंबू, नाला गढ़, गुरदासपुर, सियालकोट वग़ैरा २ मुखतलिफ * जगहों में बहुत आबाद हैं और जिले कांगड़ा, हुशियारपुर जम्बू वग़ैरा में जागीरदार और सरदार भी हैं और ३-४ रियासत नोगांव रियासत अलीपुर, रियासत छत्रपुर, रियासत उदेपुर, रियासत मलहाजनी जिले इटावा, रियासत चकमगढ़,+ रियासत झांसी वग़ैरा २ में आबाद हैं और रियासत मलहाजनी जिले इटावा से हमारी खतों ‡ कितोबत भी है। इन का नाम महाराजा प्रबलप्रताप सिंह तखी पड़िहार मौजूद हैं। महाराज हरिहर देव ज्वालामुखी की परिशतिस § करने आये थे तो महाराज कटोच तिलोकचंद ने अपनी लड़की की शादी की थी इस से ये पड़िहार पैदा हुवे थे।

नोट—जो रियासतें लिखी गई हैं ये सब राजा महाराजा तखी पड़िहार राजपूत हैं और जर साये गवर्नमेंटइन्डिया हैं, यह खानदान बहुत लंबा चौड़ा है।

अलराकिम ए।

ठाकुर सिंह तखी पड़िहार जिले कांगड़ा डाकखाना नादोन मौजे जलाड़ी पड़हारान—

---

* अनेक। + शायद टीकमगढ़। ‡ पत्रव्यवहार। § पूजा। ए लिखनेवाला।

यह नकल सही है परन्तु फ़ारसी लिपि में हिन्दी नाम सही नहीं लिखे जाते यह बड़ी लाचारी है, इसी से जान पड़ता है कि मियां साहब की चीठी की नकल में कापी नवीस से कुई गलतियां होगई हैं। दो को तो हम ने सुधार दिया है, एक तो मुल्हारजनी, जिस को तलाजीन लिख दिया था।

२ जलाड़ी जिसे तलाड़ी लिखा है, ऐसी गलतियां न जाने और कितनी रह गई होंगी।

२ चिट्ठी की नकल।

अजजलाड़ी मुत्तसिल * नादोन जिला कांगड़ी मुल्क पंजाब

१७। ४। १९१०

जनाबमन

आप का कारड मोसूल हुआ † दिल बहुत खुश हुआ। हमारे गांव में डाकिया एक हफ्ते के बाद डाक बांटता है इस वजह से कारड देर से मिला था। उमेद है माफ़ फरमावें गे। पंजाब कें पड़िहारों की तफ़सील में राजपूत में दे चुका हूं इस से जियादा हाल मालूम नहीं है। दरियाफ्त कर रहा हूं मालूम होने पर फिर इत्तला दूंगा। अब आप को सिर्फ सबूत बतलाना बाकी है जिस की कैफ़ियत यों है :—

* पास † । पहुंचा।

जब महाराजा राजा हरिहरदेव तखी पड़िहार कुशल-गोत मारवाड़ से ज्वालामुखी की परिशतिस के लिये आये थे तो इन के दूसरे भाई ने जिस का नाम मुझ को मालूम नहीं है रियासत पर कब्जा कर लिया। (बाजे कहते हैं कि अपने बड़े लड़के को योगराज* बना कर आया) बाद में महाराजा तिलोकचंद कटोच-वालिये रियासत कांगड़े ने अपनी बेटी की शादी महाराजा हरिहर देव से कर दी और कुछ रियासत जहेज में दी। इस से पैदा हुवे हुवे पड़िहार पंजाब में आबाद हैं याने कांगड़ा, हुशियार पुर, गुरदासपुर, रियासत जंबू, रियासत बिलासपुर, हरेक जिले और रियासत में बहुत से गांव आबाद हैं। इस में जागीर-दार, सरदार, जैलदार, नंबरदार वग़ैरा और और बहुत से ओहदों पर मुमताज† हैं। खास मेरे ग़ांव में करीब ५० के घर आबाद हैं। सब अच्छे मोअतबर और गवर्नमेंट के खैरख्वाह हैं बहुत से उमदा २ ओहदों पर भी मुमताज हैं। मैं खुद रिसाले में दफ़ैदार था और अब नई आबादी में २ मुरब्बे ‡ मुझे जागीर मिली है और मेरा बड़ा भाई मियां आसा सिंह पटवारी है। दूसरा भाई मियां भवानी सिंह डाक्टर है, डाक्टर साहिब का लड़का मियां समसेर सिंह ग्रावेसनर ❈ सब

---

* वलीअहद, युवराज। † इज्जत पाने वाले। ‡ २ मुरब्बा जमीन १७ बीघा होती है जो ३००० रु० की समझी जाती है। ❈ उम्मेदवार।

इन्सपेक्टर क़िले फलोर में है। २ लड़कों मियां प्रताप सिंह और अमीचंद ने इमसाल * इमतिहान एंट्रेंस दिया है मेरे गांव का नाम जलाड़ी पड़िहारान है। हम को लक़ब † मियां ‡ है और यहां जैदेवा § का रिवाज है।

मेरे भाई कृपा सिंह को भी नई आबादी में २ मुरब्बे जागीर मिली हुई है। जमना से लेकर दरिया सतलज तक सारा पहाड़ही शवालक के नाम से मोसूम + है। इस में बेशुमार राजपूत कौमें आबाद हैं जो अपनी २ जागीर और रियासत रखती हैं जिन का मुफ़स्सल हाल मैं बग़ैर दरियाफ्त किये नहीं लिख सकता। दरियांफ़्त करने पर इरसाल खिदमत करूंगा।

—०—

आबादी पड़िहारान।

जिले कांगड़े में।

जालाड़ी पड़िहारान--मुत्तसिल रियासत नादोन, मूंडी, बरगरहा, बड़ाव, पालमपुर, भल्योड़, चमयाना, जमल, बेजनाथ, अनूं, सुमेरपुर, बिहा, मल्लां, मोठली, डोल, डाडासीबा, बलवान, रोहासन वग़ैरा।

* इसबरस। † पदवी। ‡ पञ्जाब में राजपूतों को मियां कहते हैं। § पञ्जाब में राजपूतों को दूसरे लोग मुजरा की जगह देवा कहते हैं।

+ नामाङ्कित।

जिले हुशियारपुर में।

मुबारिकपुर, बरनवा, दत्तारपुर पड़िहारान, सिंदों-हगढ़, थडा वग़ैरा २।

रियासत बिलासपुर जिले जालंधर, जिले गुरदास पुर, रियासत जंबु और तकरीबन * पंजाब के तमाम हिंस्सो में पाये जाते हैं जो जागीरदार और सरदार हैं जम्बू की वजारत † भी पड़िहारों की मौरूसी है।

नोट (१) तखी पड़िहारों का गोत कुशल है और भी मुखतलिफ़ गोत हैं।

(२) वंशनाग है इस वास्ते यहां पर नागवंशी खान्दान से भी मशहूर हैं।

नोट—मिहरवानी कर के इत्तला देवें कि हिस्ट्री आप ने तत्तक खानदान के मशहूर व मारूफ राजा नन्दा से शुरू की है या किसी और जगह से और यह भी तहरीर फरमावें कि आप किस खानदान से हैं आया ‡ इसी तखी खानदान से हैं।

मिहरबानी कर के आगे भी खत किताबत से मशकूर § फरमाते रहें।

बंदे ठाकुर सिंह देफैदार
जलाड़ी मुत्तसिल नादोन
ज़िले कांगड़ा मुल्क पंजाब

* प्रायः। † कामदारी मिनिस्टरी। ‡ क्या। § आभारी।

मियां साहिब के लिखने से जाना जाता है कि आप और आप के बहुत से भाई बन्द जो पंजाब के अनेक स्थानों में रहते हैं कुशलगोती तखी पड़िहार हैं और तखी तक्षक का संक्षिप्त रूप है। राजपुताने में तक्षक को ताखा कहते हैं परन्तु राजपुताने के पड़िहार तखी वा नागवंशी नहीं माने जाते अग्नि वंशी माने जाते हैं जिनकी उत्पत्ति आबू पहाड़ पर वशिष्ट ऋषी के अग्निकुण्ड से बताई जाती है और यहां के पड़िहार भी इसी को प्रमाण मानते हैं परन्तु मंडोर से जो पुराने शिला लेख ६०० वर्ष पहिले के मिले हैं उन में ऐसा लिखा है कि हरिश्चन्द्र ब्राह्मण की २ स्त्रियां थीं १ ब्राह्मणी और दूसरी राजपुतानी ब्राह्मणी से ब्राह्मण पड़िहार और राजपुतानी से मद्यपीनेवाले राजपूत पड़िहार हुवे जिन्हों ने अपने बाहुबल से मंडोर का राज जीत लिया।

हरिश्चन्द्र भी पड़िहार ही होगा जबही तो उस के बेटों की भी जाति पड़िहार हुई थी। इन बातों से ऐसा जाना जाता है कि पड़िहारों के अनेक गोत्र अग्निवंशी, ब्रह्मवंशी और तक्षकवंशी वा नागवंशी आदि हैं पर आश्चर्य यह है कि पंजाब के पड़िहार अपने पूर्व पुरुष का मारवाड़ से आना बताते हैं और मारवाड़ के पड़िहार अग्निवंशी कहलाते हैं शायद पहिले तखी

वा तक्षक वंशी कहलाते हों या तखी पड़िहार और हों जो अब यहां नहीं रहें परन्तु और भी एक बात है जिस से मारवाड़ के परिहार भी तखी वा नागवंशी माने जासकते हैं क्योंकि यह कहा जाता है कि पहिले मंडोर में नाग वा नागवंशी राजपूत रहते थे उन का बनाया हुवा नागकुंड अब तक वहां मौजूद है और जो नदी उस कुंड के पास बहती है वह भी नागाद्री अर्थात् नागों की नदी कहलाती है और भादो बदी ५ को एक बड़ा मेला नागपंचमी का उन्हीं के समय से मंडोर में भरता चला आता है यह उन का त्यवहार का दिन था।

मंडोर जिस पहाड़ में बसता है उस का नाम भोमसेन है। जिसे पंडित लोग भोगशैल कहते हैं। भोगशैल महात्म्य में भी लिखा है कि सर्प यज्ञ के बचे हुवे नाग यहां आकर रहते थे।

अब यह प्रश्न उठता है कि नाग वा नागवंसी सांप थे या मनुष्य ? पुराणों के मत माननेवाले तो उन्हें स्वेच्छाचारी कहते हैं क्योंकि वे सांप भी बन जाते थे और मनुष्य का रूप भी धारण कर लेते थे परन्तु इतिहास बेत्ताओं के मत से वे सांप नहीं थे मनुष्य ही थे उनं के भूल पुरुष का नाम नाग था और तक्षक भी था। कोई यों भी कहते हैं कि प्राचीन समय में एक

जाति ऐसी भी थी जिस के झंडे में सर्प का चिन्ह होता था और इसी से वह नागवंसी कहलाई।

कुछ ही हो मारवाड़ की पुरानी राजधानी मंडोर में पहिले नागों वा नागवंसियों का राज रहा है उन्हीं में से पड़िहार हों तो असम्भव नहीं है फिर पंजाब के पड़िहारों का तखी पड़िहार कहलाना इस बात को और भी पुष्ट करता है।

अब यह देखना है कि तखी पड़िहार मारवाड़ से पंजाब में कब गये सो मियां साहिब तो उस का कोई समय नहीं लिखा है केवल कांगड़े के राजा तिलोकचंद का समकालीन होना लिखा है और कांगड़े के राजाओं की वंशावली में एक नहीं ७ तिलोकचंद नं ६ १०३। १३७। २४५। २७५। ३६१ और ४६८ पर लिखे हैं इन सातों में से हरिहर देव किस के पास गये थे यह कुछ भी नहीं मालूम होता। वंशावली में साल संवत् भी राजाओं का जो प्रथम राजा भूमिचंद से वर्तमान राजा जयचंद तक ४८५ हैं कुछ नहीं दिया है। केवल नं० ४६८ के पिछले तिलोकचंद का राज संबत १६६७ में होना एक अंगरेजी तवारीख से पाया गया है परन्तु इस संबत के बहुत पहिले पड़िहारों का राज मारवाड़ से जाता रहा था और हरिहर देव का पंजाब में जाना ऐसे समय में बताया जाता है कि जब पड़िहारों का राज मारवाड़ में था। शायद वह

घटना नं ३६१ वाले तिलोकचंद के समय में हुई हो परन्तु उस का यथार्थ समय निश्चित करना कठिन है क्योंकि वर्तमान समय में ४८५ राजाओं की वंशावली न तो सही समझी जा सकती है और न उस के लिये कोई समय निरूपण हो सकता है जब तक कि मियां साहिब हरिहर देव से लेकर आज तक की वंसावली न भेजें और कुछ साल संबत न लिखें। तब तक समय की बात योंही रहेगी।

(१) यह वंशावली दीवान सर्वदयाल सिंह की उर्दू तवारीख कांगड़े में लगी है।

(२) अब कांगड़ा तो कई पीढ़ी से इन के पास नहीं है एक छोटी सी जागीर लंबागिराव नामक कांगड़े के जिले में है उसी में रहते हैं।

दोआबे जालंधर के पड़िहार ।

राजपूत गजट लाहोर का पिछला फायल उलटने से दोआबे* जालंधर में भी पड़िहार राजपूतों का पता लगता है। ये भी तखी† पड़िहार ही हैं परन्तु भदाना गांव के नाम पर भद कहलाते हैं। इन की पदवी महता है। महता राजपूतों का एक बड़ा थोक उस जिले में है, जिस में कई जातियों के जमींदार राजपूत मिले हुवे हैं। दूसरे राजपूत जिन के पास वर्तमान समय में रयासतें हैं वा किसी राजा के भाई बेटे हैं इन महता राजपूतों को अपने बराबर का नहीं समझते हैं। ऐसी ही चाल राजपूताने में भी है कि जिन राजपूतों के पास अब राज और उस राज की दी हुई बड़ी२ जागीरें हैं वे भोमियां तथा खेती और नौकरी करने वाले या जिन का राज जाता रहा हो और कुछ भी जमीन पास नहीं रही हो ऐसे राजपूतों को अपने से नीचा मानते हैं, चाहे वे उन के भाई बंद ही क्यों न हों। जैसे पड़िहार पहिले मारवाड़ के राजा थे अब मारवाड़ में ही राठौड़ उन को अपनी बराबरी का नहीं गिनते। आज बाड़राव जैसे प्रबल महाराजा की

---

* सतलज और व्यासा नदियों के बीच में जो देश है वह दोआबे जालंधर कहलाता है।

† तखो पड़िहारों का दूसरा नाम नागबंशी भी है। इस जाति के पड़िहार राजपूत कहते हैं कि हमारे तचक बंशी होने का यही प्रमाण है कि हम को सांप का जहर नहीं चढ़ता है।

संतान जोधपुर के खवास पासबानी में लिखी जाती है उस को उमरा (अमीरों) और सरदारों में नहीं लिखी जाती, न उस का संबंध राजपूतों के उन बड़े घरों में होता है जो राजा वा जागीरदार होने का घमंड रखते हैं। ऐसी ही श्रेणी के पंजाबी राजपूतों ने भी महता राजपूतों को समझ रक्खा है।

दोआबे जालंधर में कई गांव भद पड़िहारों के हैं। वे कहते हैं कि हमारे मूल पुरुष मियां संसारचंद का विवाह ज़िले जालंधर के गांव भदियाना के मनहास राजपूतों में हुआ था। जिस में वे अपने गांव राजपुर तहसील ऊना जिला हुशिआरपुर से उठ कर भदियाने में जा रहा। वहां उस की ससुरालवालों ने कुछ जमीन उस को दे दी, जिस में वह कालरा नाम एक गांव बसा कर रहने लगा। इस प्रसंग से उस की संतान का नाम भद हो गया।

संसारचंद की पांचवीं पीढ़ी में मियां फूलचंद था। उस का विवाह जिले जालंधर के गांव गनाचूर* के डोड राजपूतों में हुई, जहां उस को भी कुछ जमीन दहेज में मिली और उस ने कालरा छोड़ कर उस जमीन में करनाना नाम गांव बसा लिया, जिस को अब तक उस की संतान भोगती है।

---

* महता राजपूतों में यह बात प्रसिद्ध है कि गनाचूर, प्राचीन समय में बड़ा नगर गोपीचंद का बसाया हुआ था जो बंगाले का राजा तथा भरथरी और विक्रमादित्य का भानजा था।

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
भूमिका :—			
१	१७	जिन	जिस
"	२१	हार्थों	हाथों में
२	२	इदां	ईंदा
३	२३	में	के
५	४	की	का
"	१६	बनरनी	बरनी
६	२०	है	हैं

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१७	प्रय	वय
७	२१	लवा	गिरकर
"	२२	लोट	लोटपोट
८	५	के	वे
८	१०	के दिन के दिन	के दिन
११	१३	पचों	यचों
१८	६	प्रसाद के	प्रसाद से
२०	८	अमय	अभय
२६	५	विसन	पाप
२६	२४	आगरे	आगर
२७	३	हठ स	हठ से
२८	४	लूट	लुट
३०	६	खुब	खूब
३८	११	कुछ	कछ
४०	८	कर	करते
४३	२३	समय	समय में

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६०	८	इसे	इस
६१	१०	५	६
६३	१२	झांवरां	झांवर
,,	१३	को उस	उस को
६५	६,१०,१२	ख़ाजा	ख़्वाजा
६६	७	कह के	कहकर
६८	१८	बेटिया	बेटियां
७०	१	गोत	१ गोत
७१	५	बलदान	वलिदान
७२	१२	को बेठी	को बेटी
७३	८	[illegible]	रो
,,	१५	सरवस्तवा	सरवुस्तवा
७९	१	कोरणावाटो	कोरणावाटो परगने पचभद्रा
,,	२	में पचभद्रे	में
,,	३	से परगने	से
,,	६	जमीन १	जमीन को १
,,	६	चिटकोगढ़	चिट शेरगढ़
,,	७	छीतरना	छीतर नाम
८०	१२	जो धारी	जोधारी
,,	१३	इस में है	है इस में
८१	५	का	के नाम पर
८१	५	बसाया	बसा
८३	२	सल	सड़
८३	१७	टहराते	ठुहराते
८६	५,७	बड़ व्योड़ा	वड व्योवड़ा
८५	१०	जी मन	जीम, न
८६	१७	जाती	जाता
,,	२२	सिंह	सिद्ध
९४	६,८	देवरा जोत	देवराजोत

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८४	६,८	से तरावे	सेतरावे
८५	१२	देवरा जोत	देवराजोत
,,	१७	बेरो दासो तों	बेरोदासोत
८६	२२	मांड	मांडू
८७	२०	केहिं	कै
१०२	१२	बराई	बेराई
१०४	१३	मरने परगने	परगने
,,	१६	बड़े	बड़ो
१०५	१२	घेटू	घेटू तो
१०६	१०	आयो	आग्नि
,,	१७	करसां	करहलां
,,	१७	की कारण	की काणां
१०७	१५	तीनों	तीनां
,,	१६	भागा	भांगा
,,	१६	खागांई सफ	खागां ईसफ
१०८	३	यु	यू
११२	१	मंदाद्री	मंदोद्री
,,	३	उन के	उस में
११३	१	जावे	जावें
,,	४	इंद वह	इंदवह
११६	१	राज्य	राज
,,	१	उच्छे	उर्छे
,,	६	उदे	उर्छे
,,	१६	को	के
११८	१८	परवाह	परगह
१२८	१	सहोफो	सहोफे
,,	१	जरीन	जरीन
,,	१५	१८४४	१८७४

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
,,	१८	और आद	आद
,,	२०	१५०००	१५००००
१३०	७	नसीनी	नशीनी
,,	१२	बैठ	बैठ कर
१३१	५	के	को
१३२	५	इसे	इस से
,,	२२	वपड़ावत	बगड़ावत
१३३	४	के	को
,,	१३	बोलने	बोलना
१३६	१[illegible]	[illegible]	सुरार
[illegible]	१२	का	कि
१३८	१	भुबारक	मुबारक
,,	८	कितोबत	किताबत
,,	१६	जर	जेर
१३८	५	मल्हारजनी	मल्हाजनी
१४१	२०	देवा	जैदेवा
१४४	१०	का	के